पंचम अध्याय

पंचम अध्याय

'बिस्रामपुर का संत' उपन्यास में उद्देश्य का अनुशीलन

हर कृति एक सोद्देश्य रचना होती है । कृतिकार या रचनाकार अपने सुनिश्चित मंतव्य को, विचार प्रवाह को योजनाबद्ध रूप से अपनी कृति द्वारा प्रस्तुति देता है, चाहे फिर वह उपन्यास हो, कहानी हो या नाटक हो ।

अत: उद्देश्य के कारण ही उपन्यास का स्वरूप, कथ्य एवं आशय के संबंध में महत्त्वपूर्ण बातें दृष्टिगोचर होती हैं । हिंदी उपन्यासों के क्रमिक विकास में उनके ध्येय, दृष्टिकोण तथा उद्देश्य आदि में क्रमश: बदलाव आता गया है । समयानुसार पाठकों के बदलते स्तर और अभिरूचि के अनुसार उपन्यास के स्वरूप में भी उद्देश्य परिवर्तन होता जा रहा है । उपन्यास का उद्देश्य मनोरंजन तो अवश्य है लेकिन आज वे मनोरंजन के अतिरिक्त किसी एक विशिष्ट उद्देश्य का प्रतिपादन करते हैं और जीवन की अपने दृष्टिकोण के अनुसार व्याख्या करते हैं । लेखक अपने विचारों या सिद्धातों के प्रतिपादन के लिए अनेक पात्रों की सृष्टि करता है और उनके परस्पर विरोधी विचारों में संघर्ष दिखाकर अपने सिद्धांत की उत्कृष्टता को सिद्ध करता है, अत: लेखक के आदर्शों और विचारों का प्रतिनिधित्व नायक द्वारा होता है ।

उद्देश्य तत्व समस्त उपन्यास के तत्वों में एक महत्त्वपूर्ण या आत्मत्व के रूप में स्वीकृत है, क्योंकि इसके बिना उपन्यास का कोई मूल्य या महत्त्व ही नहीं रहता । मानव जीवन का चित्रण करना, समस्याओं की अभिव्यक्ति करना, रंजन के साथ ही दर्शकों की कर्तव्यबुद्धि, विवेकबुद्धि जागरत करना, सामाजिक प्रबोधन करना उपन्यास के सर्वोपरी उद्देश्य रहे हैं । इसी दृष्टि से उपन्यासकार भिन्न-भिन्न उद्देश्य लेकर उपन्यास की योजना करते हैं । किसी भी

उपन्यास की वैचारिक गहनता तथा भावसृष्टि उपन्यासकार के महान लक्ष्य, उसकी प्रेरणा तथा उसकी अनुभूति की गहराई पर ही आधारित रहती है ।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत देश अंग्रेजी सत्ता की दासता से मुक्त हुआ । देश की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक स्थिति में परिवर्तन आया । भारतीय लोगों में खुशी की लहर दौड़ आयी किंतु भारतीय श्रमिक, किसान वर्ग के जीवन में किसी भी प्रकार का परिवर्तन नहीं आया । स्वतंत्रतापूर्व स्थिति में उनकी हालत जैसी थी, स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी वैसी ही रही । फर्क केवल इतना ही है कि पहले अंग्रेजी शासनसत्ता उनका खून चूसती थी, उसके स्थान पर अब भारतीय शासक आ गए ।

आज हमारा भारत देश उन्नति के प्रगतिशील कदम बढ़ा रहा है, अत: सभी दृष्टि से वह विकास के नए सोपान प्राप्त कर रहा है, उसी भारत देश का किसान वर्ग, मजदूर वर्ग जमींदारी वर्ग की दासता में है, शोषण की भीषण आग में झुलस रहा है । भारत जैसे स्वतंत्र लोकशाही जनतंत्र में भी किसान, मजदूर वर्ग की हो रही दुरावस्था, अपने ही लोगों द्वारा उनका हो रहा शोषण, उसके लिए जिम्मेदार राजनीतिक परिस्थितियाँ, राजनीतिक नेताओं की ढोंगी वृत्ति आदि को समाज के सामने लाना, तथा उस दृष्टि से मानव-समाजको चिंतन के लिए प्रेरित करना उपन्यासकार का मूल उद्देश्य है ।

शुक्ल जी ने 'बिस्रामपुर का संत' उपन्यास के माध्यम से स्त्री-पुरुष संबंध के विविध प्रकार पाठकों के सामने प्रस्तुत किए हैं । उपन्यास के केंद्रिय पात्र कुँवर जयंतीप्रसाद सिंह नारी को केवल एक भोग्यवस्तु की नजर से ही देखते हैं । अत: नारी के प्रति उनकी नजर या दृष्टिकोण भोगवादी है । इसके बिल्कुल विपरित उनका बेटा विवेक नारी में जीवन देखता है, नारी के प्रति उसका दृष्टिकोण श्रद्धामयी है । विवेक की मानवीयता और अध्ययन से प्रभावित होकर सुंदरी विवेक से शादी करने का विचार करती है अत: वह उसकी ओर आकर्षित होती है ।

परिष्कृत संस्कारों से पूर्ण सुंदरी को संपन्नतापूर्ण जीवन से मोह नहीं है । उनके प्यार में कहीं भी शारीरिक वासना का अतिरेक नहीं है अत: इन दोनों के माध्यम से लेखक ने आदर्श प्रेम का उद्‌घाटन करना चाहा है ।

दूसरा उद्‌देश्य यह रहा है कि नारी में अपने को प्रदर्शित करने की भावना होती है, उस भावना के कारण कभी-कभी वह ऐय्याशी जीवन की ओर आकर्षित होती है । उसी आचरण के कारण वह अपने रिश्ते-नाते भूल जाती है और अपने पति से भी धोखा देने में हिचकिचाती नहीं । जयश्री एक विवाहित नारी होते हुए भी कुँवर साहब से संबंध रखती है अत: अप्रत्यक्ष रूप से पति से फरेब करती है ।

लेखक ने प्रस्तुत उपन्यास में कुंठाग्रस्त वृत्ति का मनोद्‌घाटन किया है । कुँवर साहब बौद्‌धिक दृष्टि से संपन्न होकर भी अपनी कुंठाओं से मुक्त नहीं हो पाते उनका अतीत उन्हें हरदम अपने नागपाडा में जकड़े रहता है और उनके संस्कार उन्हें कोई क्रांतिकारी कदम नहीं उठाने देते ।

कुँवर साहब कुंठित तथा जरूरी से भी ज्यादा महत्त्वाकांक्षी होने के कारण एक साफ सुथरी जिंदगी नहीं जी पाते । वे हमेशा अतृप्त रहे हैं और उसके कारण, जीवन में आए अनेक सुखदायी क्षणों को गलत निर्णय में बदल दिया है । अगर कुँवर साहब को गहराई से देखे तो ऐसा लगता है कि उनके विचार मानवतावादी तथा उच्च आदर्श के मूल होते हुए भी वह अपनी कुंठाओं से बाहर नहीं निकल सके । उनके खून में कुंठाओं की एक लंबी परंपरा पलती रही हैऔर उससे मुक्त होने की कोशिश उनमें दिखाई देती है ।

इससे स्पष्ट होता है कि मनुष्य में कितनी भी आत्म-हीनता, कुंठाग्रस्तता हो, वह उसमें संस्कार के रूप में क्यों न हो मनुष्य उसमें परिवर्तन कर सकता है, पर उसके लिए उसमें

मानवीयता का होना आवश्यक है और यही लेखक शुक्ल जी का उद्देश्य रहा है । अत: इससे मुक्ति पाने का उपाय है-जनसेवा, जो कुँवर साहब आखिर में अपनाते हैं ।

मोह का क्षण आदमी को कैसे नीचे गिरा देता है, तथा उसके परिणाम क्या होते हैं आदि लेखक ने कुँवर साहब के माध्यम से तथा धन के लोभी निर्मल भाई के माध्यम से स्पष्ट किया है ।

शुक्ल जी का उद्देश्य यह भी रहा है कि जमींदार और किसान वर्ग के पात्रों की परिस्थिति, परिवेश तथा वैचारिकता को सूक्ष्मता से चित्रण करना इस उद्देश्य के पीछे लेखक की ग्रामांचल की स्थिति का चित्रण अंकित करने का प्रयत्न है ।

बिस्रामपुर का संत के द्वारा लेखक ने यह भी सूचित किया है कि व्यक्ति को अपने अन्याय-अत्याचार को चुपचाप नहीं सहना चाहिए बल्कि एकसंघ होकर उसका विरोध करना चाहिए । उपन्यास में दुबे द्वारा किसानों की जिस जमीन पर कब्जा किया था उसी जमीन में हल जोतकर किसान, दुबे की एकाधिकार सत्ता को चुनौती देते हैं । अत: आवश्यकता है डटकर अन्याय का विरोध करने की, सफलता की अंतिम सीढ़ी तक संघर्ष जारी रखने की । अत: निर्भयता से डटकर अन्याय का विरोध करना चाहिए । यही उपन्यासकार ने रामलोटन और अन्य किसानों के द्वारा सूचित किया है ।

आधुनिक काल में हिंदी के सामाजिक उपन्यासों में प्रकृति-चित्रण का वातावरण कम मात्रा में दिखाई देता है । अत: सामाजिक उपन्यासों में समाज से संबंधित परिवेश, परिस्थिति, रहन-सहन आदि का ही चित्रण मिलता है परंतु 'बिस्रामपुर का संत' यह एक सामाजिक उपन्यास होकर भी इसमें प्रकृति-चित्रण के मनोहारी दृश्य चित्रित मिलते हैं । प्रकृति चित्रण के माद्यम से लेखक ने अपना प्रकृति-प्रेम चित्रित किया है और पात्रों के मन में चल रहे संघर्ष का आरोप प्रकृति पर करके अपना उद्देश्य साध्य किया है ।

निष्कर्षत: 'बिस्रामपुर का संत' यह उपन्यास भूदान आंदोलन की पृष्ठभूमि पर आधारित है, अत: यह आंदोलन किस मायने तक सफल रहा और उसमें राजनीतिक नेताओं की कुटनीति किस तरह बरकरार रही इसे पाठकों के सामने प्रस्तुत करना यह लेखक का महत्त्वपूर्ण उद्देश्य प्रस्तुत उपन्यास की निर्मिती के पीछे रहा है । अत: अनेक स्तर के पात्रों की निर्मिती करके लेखक ने अपने उद्देश्य को सफलता तक पहुँचा दिया है ।

जिन्होंने भूदान यज्ञ में जो जमीन दान के रूप में दे दी उसमें से अधिकतर जमीन बंजर रही थी, उस जमीन में पुनश्च: सुधार करने की जरूरत होने लगी । तब कहीं किसान उसमें से अनाज की निर्मिती कर पाएँगे । अत: इसका स्पष्टीकरण लेखक ने उपन्यास में किया है और यही दिखाऊपण या नाटकिय वृत्ति को लेखक शुक्ल जी ने प्रस्तुत रचना के माध्यम से पाठकों के सामने रखा है ।

भूदान आंदोलन में अनुदान के रूप में जो पैसा मिलता था वह राजनीतिक लोग किस तरह अपने स्वार्थ के लिए उपयोग में लाते, अत: राजनीतिक नेताओं की पोल खोलने का सफल प्रयास करके लेखक ने ऐसे लोगों की ढोंगी प्रवृत्ति का पर्दाफाश किया है तथा भूदान आंदोलन के नाम पर भ्रष्टाचार करके किस तरह लोग अपने स्वार्थ की ओर प्रेरित होते हैं इसका स्पष्टीकरण करके लेखक ने भ्रष्टाचार प्रवृत्ति के लोगों की पोल खोली है ।

अत: लेखक शुक्ल जी ने इन तथ्यों को पाठकों के सामने प्रस्तुत करने के लिए 'बिस्रामपुर का संत' इस उपन्यास निर्मिति की है और ऐसी व्यवस्था पर व्यंग्य का कड़ा प्रहार किया है ।

संक्षिप्त में हम कह सकते हैं कि इस उपन्यास में लेखक ने ग्रामीण हड़पनीति, आपसी इर्ष्या, दो पिढ़ियों के बीच का संघर्ष, ग्रामीण जन-जीवन की नीति-अनीति के संबंधी धारणा, प्रेम की अवधारणाएँ, सरकार संस्थाओं में चलनेवाला भ्रष्टाचार, किसान आंदोलन,

ग्रामीण जन-जीवन की आत्मकेंद्रितता, राजनीतिक नेताओं का दोगलापन, ढोंगी वृत्ति पात्रों के बीच के अंतर्द्वंद्व, अतृप्ति से निर्मित विकृति, अनैतिक प्रेम संबंध आदि ग्रामीण जन-जीवन के विविध पहलुओं पर प्रकाश डालना श्रीलाल शुक्ल हा उद्देश्य है ।